Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2020, VOL- 8/62

भारतीय अर्थव्यवस्था संकट में : कोविड-19 का प्रभाव एवं चुनौतियाँ

प्रो. अलका जैन
सह प्रा. (अर्थशास्त्र), श्री अटल बिहारी वाजपेयी, शा. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर
E-mail: profalkajain@gmail.com

"हम इस महामारी से जीतेंगे और पीएम मोदी के नेतृत्व में अर्थव्यस्था फिर अच्छी होगी। यह मेरा विश्वास है.।"

– नितिन गडकरी

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना :

कोविड–19 एक ऐसी महामारी जिसने विश्व अर्थव्यवस्था को बरबादी के दल–दल में धकेल दिया है। विश्व के 212 से अधिक देशो में 41 लाख से अधिक जनसँख्या को संक्रमित तथा 2.8 लाख से अधिक जनसँख्या को मृत्यू की चपेट में लेने वाले कोविड–19 ने पूरी मानव जाति को लॉकडाउन कर उनकी उत्पादन, उपभोग, व्यापर, रोजगार , जीवन शैली एवं अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित कर दिया है। 600 लाख हजार डॉलर की आर्थिक हानि के अनुमानों के साथ 2.8 लाख से अधिक की जन–हानि संपूर्ण संसार के लिए एक भीषणतम चुनौती है।

वास्तव में दुनिया की अर्थव्यवस्था अभी ICU में है। कोविड–19 से विश्व की GDP 20 प्रतिशत गिर जाने का अनुमान है जबकि विश्व महामंदी 1929-30 के समय GDP 15 प्रतिशत कम हुई थी अर्थात विश्व को उससे भी खतरनाक स्थिति का सामना करना पर सकता है। यह महामारी दुनिया को और 20 प्रतिशत गरीब बनाकर जायेगी। यूनाइटेड नेशन ने अनुमान लगाया है की अगले दो वर्षो में कोविड–19 महामारी के कारण विश्व अर्थव्यवस्था को 8 ट्रिलियन डॉलर का नुकसान होगा। ऐसी संकट की स्थिति में इस महामारी का वैश्विक परिदृश्य में भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव का अध्ययन करना तथा वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था किन चुनौतियों का सामना कर रही है और उनका क्या समाधान होगा यह अध्ययन करना आवश्यक है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अध्ययन का उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य कोरोना महामारी का विश्व अर्थव्यवस्था एवं भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव का अध्ययन करना, सकल घरेलु उत्पाद, रोजगार, आय, आयात–निर्यात, मांग एवं पूर्ति की असमानता एवं अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रो पर प्रभाव का अध्ययन करना, इससे उत्पन्न समस्याओं, संकटों एवं चुनौतियों का पता लगाना तथा समाधान एवं निष्कर्ष प्रस्तुत करना है।

अध्ययन की विधि :

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक समंको पर आधारित हैं जिसमें समग्र रूप से अध्ययन क्षेत्र भारत लिया गया हैं। विश्लेषण, व्याख्या एवं तुलनात्मक अध्ययन विधि द्वारा उद्देश्यों का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाले गये हैं। सांख्यिकीय रीतियों में औसत, प्रतिशत एवं रेखा चित्रों का प्रयोग किया गया है।

भारतीय अर्थव्यवस्था–विकास का उभरता वैश्विक परिदृश्य और कोरोना कहर :

विश्व की 17.5 प्रतिशत जनसंख्या एवं 2.4 प्रतिशत भू–क्षेत्रफल रखने वाले भारत के संदर्भ में पिछले दशक की सबसे बड़ी घटना इसका वैश्विक परिदृश्य में उभरना है। भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी सबसे बड़ी तथा चीन के बाद दूसरी आर्थिक वृद्धि वाली अर्थव्यवस्था हैं। सोने की चिड़ियाँ कहाँ जाने वाला भारत 300 वर्ष तक गुलामी की जंजीरो में जकड़ा रहा तथा स्वतन्त्रता के समय आर्थिक रूप से जर्जर एवं कमजोर था। नियोजित आर्थिक विकास के माध्यम से लोकतान्त्रिक समाजवादी समाज की स्थापना एवं संरक्षित विकास का उद्धेश्य लेकर भारत निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर होता रहा। 1991 के आर्थिक सुधारो, उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीति ने भारतीय अर्थव्यवस्था के स्वरूप एवं दिशा को बदल दिया। उप्पादन तकनीक, विदेशी पूंजी, उद्योगो का निजीकरण, उदार मुद्रा नीति, लायसेंस प्रणाली की समाप्ति, खूला आयात–निर्यात, रूपये की पूर्ण परिवर्तनीयता, इत्यादि ने भारतीय अर्थव्यवस्था को तेजी से विकसित किया। आधारभूत संरचना का विकास, बैंक, बीमा, यातायात, ऊर्जा, संचार, सूचना प्रौद्योगिकी, शोध, अनुसंधान, आविष्कार ने भारतीय अर्थव्यवस्था के स्वरूप को परिवर्तित कर दिया। आज जबकि सकल घेरलु उत्पाद, बचत, विनियोग, पूंजी निर्माण, कृषि उत्पादन, औद्योगिक उत्पादन, निर्यात इत्यादि में वृद्धि कर भारत विश्व की तीसरी आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा था तथा 2019 में 3.2 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था तथा 422 बिलियन डॉलर के विदेशी मुद्रा भंडार के साथ सशक्त हो रहा था कि अचानक कोरोना कहर ने भारतीय अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित कर दिया और उसे एक ओर महामंदी की और धकेल दिया है।

कोविड-19 के पूर्व एवं पश्चात विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की सकल घरेलु उत्पाद स्थिति -कोरोना महामारी का सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था एवं उसके सकल घरेलु उत्पाद पर ऋणात्मक प्रभाव पड़ा है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तालिका क्र. 1 विश्व के प्रमुख देशो की GDP वृद्धि दर कोविड–19 के पूर्व एवं पश्चात की तुलनात्मक स्थिति को दर्शाती है।

तालिका क्र. 1

विश्व के प्रमुख देशो की GDP वृद्धि दर कोविड–19 के पूर्व एवं पश्चात की तुलनात्मक स्थिति

		कोविड–19 के पूर्व		कोविड–19 के पश्चात (आनुमानित)	
क्र.	**विश्व एवं देश**	**वर्ष 2018**	**वर्ष 2019**	**वर्ष 2020**	**वर्ष 2021**
1.	विश्व	3.6	3.01	0.1	0.2
2.	अमेरिका	2.9	2.4	–5.9	4.7
3.	युरोपिय संघ	2.2	1.5	–7.4	6.1
4.	ब्रिटेन	1.4	1.2	–8.3	6
5.	जर्मनी	1.5	0.5	–6.5	5.9
6.	जापान	0.8	0.9	–5.9	3.0
7.	रूस	2.3	1.1	–6.0	1.0
8.	भारत	6.8	6.1	1.9	7.4
9.	चीन	6.6	6.1	1.2	9.2

स्त्रोतः आईएमएफ, वर्ल्ड इकानामिक आउटलुक डाटाबेस अक्तूबर 2019, अप्रैल 2020, Zee News DNA 17/04/2020

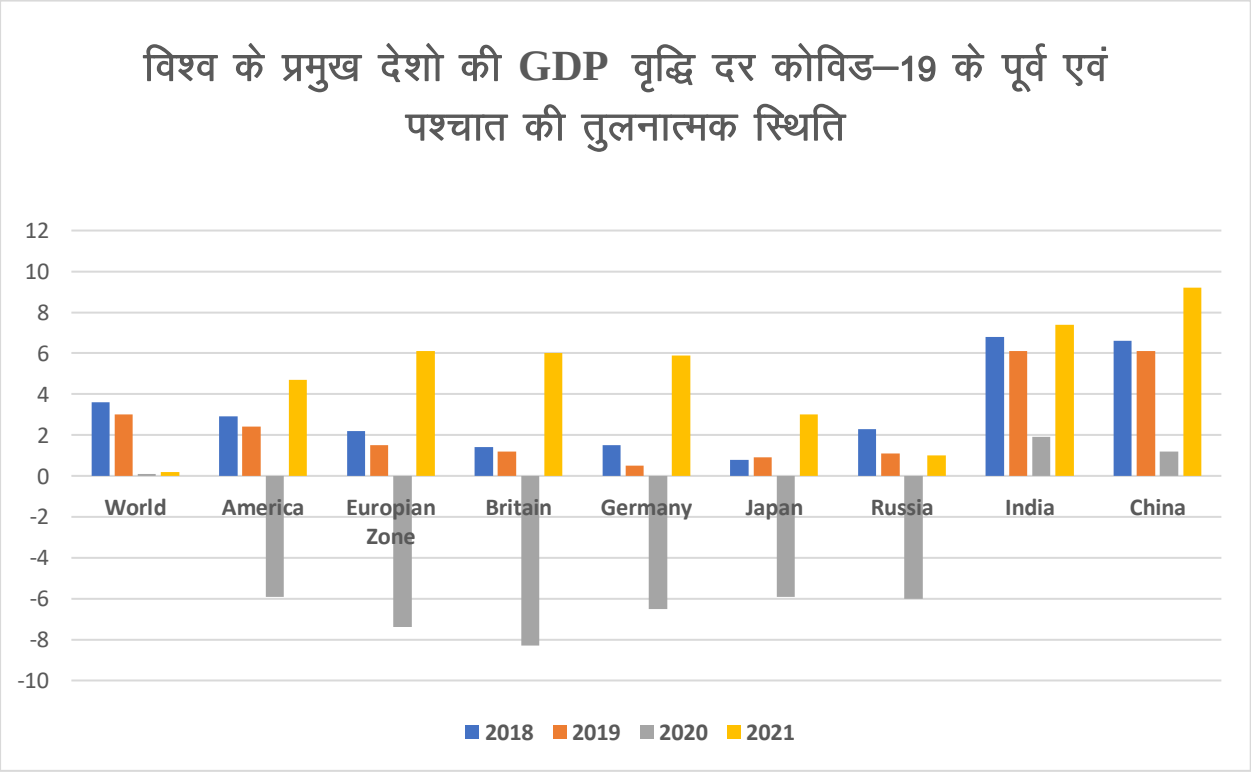

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तालिका क्र 1 से स्पष्ट हैं कि विश्व की अर्थव्यवस्थाऐ जो कोविड–19 के पूर्व जिस दर से व्रद्धि कर रही थी कोविड–19 के पश्चात उनकी व्रद्धि दर तेजी से ऋणात्मक हो रही है। मुख्य रूप से अम्रीका, यूरोप, जर्मनी, जापान एवं रुस जैसी विकसित अर्थव्यवस्था को कोरोना कहर ने तहस–नहस कर दिया है।यहाँ जन धन की हानि के साथ लोकडाउन ने अर्थव्यवस्था की प्रगति के पथ को लॉक कर दिया है। भारत एवं चीन की स्थिति यह है कि कोरोना कहर एवं लोकडाउन से अर्थव्यवस्था की व्रद्धि दर अचानक तेजी से कम हुई है जहाँ 2019 में भारत की ळक्ष् वृद्धी दर 6.1 प्रतिशत थी वह कोविद–19 के पश्चात 2020 में 1.9 प्रतिशत अनुमानित की गयी है। वही चीन की 2019 में जीडीपी वृद्धि दर 6.1 प्रतिशत थी वह 2020 में घटकर 1.2 प्रतिशत रहेने का अनुमान है। विश्व में आर्थिक रूप से सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका की वृद्धि दर 2019 में 2.4 प्रतिशत थी वह घटकर -5.9 प्रतिशत रहेने का अनुमान है। सम्पूर्ण विश्व की 2019 की औसत वृद्धी दर 3 प्रतिशत थी वह 2020 में 0.1 प्रतिशत रहने की सम्भावना है।

स्पष्ट है कि कोरोना महामारी ने विश्व अर्थव्यवस्था की मंदी के दल–दल में धकेल दिया है। जनसंख्या की सस्वस्थ्य हानि तो महत्वपूर्ण है ही उनकी जीवन शैली भी दयनीय हो गयी है, घरो में केद है, उनकी उपभोग, उत्पादन विनिमय वितरण सभी आर्थिक क्रियाओ पर दुष्प्रभाव पड़ा है। सरकार के राजस्व में भारी कमी आई है। समग्र रूप से आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, सभी दृष्टि से महामारी से मनुष्य को बुरी तरह प्रभावित किया है।

यदि विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओ का सकाल घरेलू उत्पाद में योगदान देखे तो ज्ञात होता है कि 1990 के बाद से विश्व की उन्नत अर्थव्यवस्थाओ को योगदान लगातार कम हुआ है यूरोपियन संघ, यूरोजोन, जापान, जर्मनी एवं यूके जैसे विकसित देशो के योगदान में लगातार कमी आई है वही चीन जिसका सकल घरेलु उत्पाद में 1990 में 1–8 प्रतिशत योगदान था आश्चर्यजनिक रूप से लगातार वृद्धि कर 2019 में 16–3 प्रतिशत हो गयी है। वही महाशक्ति अमेरिका के योगदान में उतार–चढ़ाव देखने को मिलता है। 2019 में सर्वाधिक 24% योगदान अम्रीका का है जो विश्व में नंबर 1 पर है, तथा चीन का 16 प्रतिशत, जापान का 16 प्रतिशत, जर्मनी का 4.4 प्रतिशत तथा भारत का 3.3 प्रतिशत है। जबकि युरोपियन संघ का 21 प्रतिशत एवं यूरोजोन का 15 प्रतिशत योगदान है। विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं का सकल घरेलु उत्पाद में योगदान तालिका क्र. 2 में दर्शाया गया है ।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तालिका क्र. 2

विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं का सकल घरेलु उत्पाद में योगदान एवं भारत की स्थिति (प्रतिशत में)

क्र.	विश्व एवं देश	1980	1990	2000	2005	2010	2015	2019
1	उन्नत अर्थव्यवस्थाएं	46.2	79.7	79.7	76.1	65.8	60.5	59.7
2	अमेरिका	26.0	26.1	30.9	27.7	23.1	24.3	24.7
3	युरोपिय संघ	34.1	31.7	26.4	30.2	25.8	27.9	21.1
4.	युरोजोन	—	—	19.4	22.3	19.3	15.6	15.3
5.	यूके	5.1	4.6	4.6	5.0	3.6	3.8	3.1
6.	जर्मनी	7.7	7.0	5.9	6.1	5.2	4.5	4.4
7.	जापान	10.0	13.8	14.5	10.0	8.7	5.8	5.9
8	ब्राजील	1.5	2.3	2.0	2.0	3.3	2.4	2.1
9.	रूस	—	—	0.8	1.7	2.4	1.8	1.9
10.	भारत	1.7	1.5	1.5	1.8	2.6	2.8	3.3
11.	चीन	1.9	1.8	3.7	5.0	9.3	15.0	16.3
12	दक्षिण अफ्रिका	0.8	0.5	0.4	0.5	0.6	0.4	0.4

स्त्रोतः आईएमएफ, वर्ल्ड इकानामिक आउटलुक डाटाबेस अक्तूबर 2019 (आर्थिक समीक्षा 2011–12, सारणी 14.2 पृष्ठ क्रमांक 340, आर्थिक समीक्षा 2019–20, पृष्ठ क्रमांक 4)

तालिका क्र. 2 से स्पष्ट है कि विश्वव GDP योगदान में दूसरा स्थान रखने वाला चीन अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत कर प्रथम आर्थिक महाशक्ति बनाने तथा अम्रीका को कमजोर करने के लिए संभावतः जैविक हतियार के रूप में मानव निरयित कोविद–19 वायरस का उपयोग किया है। क्यूंकि कोविद–19 वायरस कि शुरुआत चीन के वुहान शहर से हुई और ऐसा माना जा रहा है कि वही कि लैब से ये वायरस लीक हुआ है । कोविड–19 महामारी के प्रभाव से इन देशो के योगदान में भी अंतर आयेंगा मुख्य रूप से यूरोपियन देशो एवं अमेरिका के योगदान पर ऋणात्मक प्रभाव आयेंगा।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

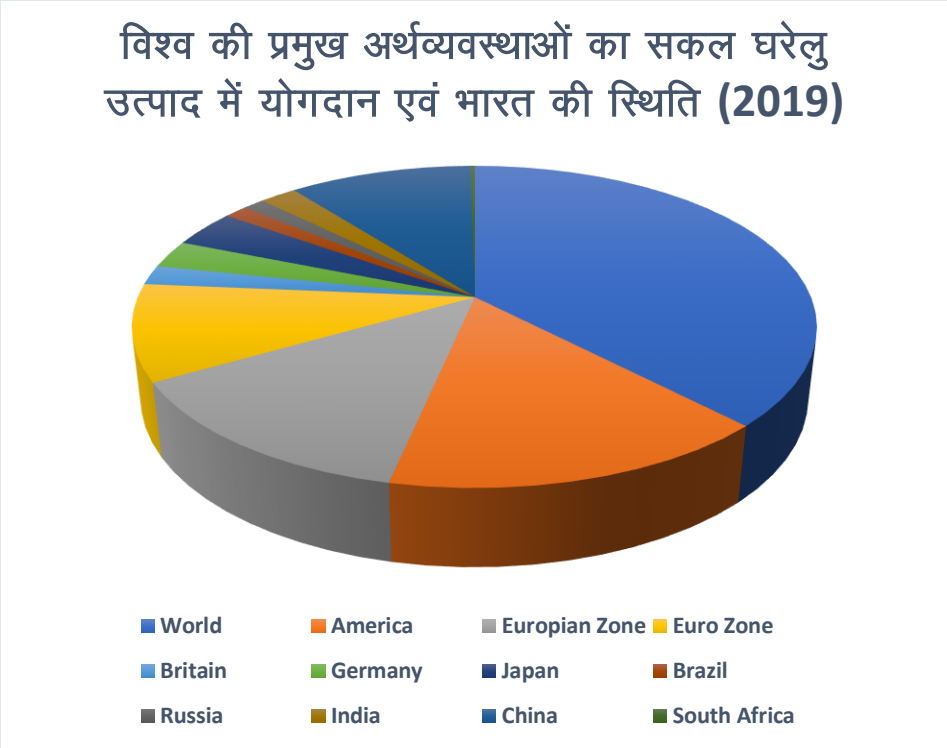

भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव :

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के अनुसार– " हम बूरे दौर से गुजर रहे है ।" अर्थव्यवस्था को 10 लाख करोड़ रूपए का नुकसान तथा 1.5 करोड़ रोजगार की कमी भारतीय अर्थव्यवस्था को मंदी के गर्त में पंहुचा सकती है । भारत में से 67000 से अधिक संक्रमित तथा 2200 से अधिक मृत्यु हो चुकी है । विश्वस्वास्थ संगठन के अनुसार यदि वैक्सीन नहीं निकलता तो विश्व की 70% जनसँख्या करोना से ग्रसित हो जाएगी । भारत की 75% वर्कफोर्स जो स्वरोजगार एवं कैसुअल वर्कर्स है, उनपर सबसे अधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है । 400 मिलियन संगठित एवं अनोपचारिक क्षेत्र में कर्यारित जनसंक्या अत्यधिक प्रभावित हुई है । 14 करोड़ मजदुर पलायन के कारण दयनीय स्थिति में है द्य उनके खाद्यान एवं रोजगार की समस्या भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने मुहबाए खड़ी है । 3.0 लॉकडाउन के पशचात भारतीय अर्थव्यवस्था को 234 अरब अमेरिकी डॉलर के नुकसान का अनुमान है द्य कोविद–19 के प्रभाव को दो तरह से देखा जा सकता है– **प्रतिकूल प्रभाव :**

उद्योग जो हानि में जाएंगे– ऑटोमोबाइल, पर्यटन, एयर–सर्विसेज, टूर ओपेरटर, हॉस्पिटैलिटी, होटल, रेस्टोरेंट, टेक्सटाइल, रियल–एस्टेट, एविएशन, सिनेमा, ओला, उबेर इत्यादि।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

- **अनुकूल प्रभाव :**

ऑनलाइन शौपिंग बिजनस कम्पनी जैसे– अमेजन , अलीबाबा , फ्लिप्कार्ट इत्यादि। सोशल मीडिया कम्पनी– फेसबुक, टिकटोक, व्हात्सप्प, इन्स्टाग्राम इत्यादि। जीवन जीने के लिए जरुरी– अनाज, सब्जिया इत्यादिद्य कोरोना केयर– मास्क , सेनेटिजेर , हैण्ड वॉशर , दवाईया इत्यादि। भारत में अभी सात हजार करोड़ की इंडस्ट्री PPE किट्स उत्पादन की विकसित हुई है ।

निष्कर्ष एवं चुनौतियाँ :

वर्त्तमान में 302 ट्रिलियन की भारतीय अर्थव्यवस्था जो 7.5 प्रतिशत औसत वार्षिक विकास दर से बढ रही थी अचानक कोविद–19 महामारी से संकट की स्थिति में पहुँच गयी है । विश्व बैंक, अन्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष, एशिआई विकास बैंक, मूडीस, आदि संस्थाओं ने भारत की विकास दर की गिरावट का संकट दर्शाया है । कोविड–19 ने पूरी अर्थव्यवस्था उपभोग, उत्पादन, विनिमय, वितरण, राजस्व, उद्योग, व्यापार, जीवनशैली, यहाँ तक की मनुष्य की सामाजिक, आर्थिक एवं मानसिक स्थिति को बूरी तरह प्रभावित किया है । वास्तव में उपभोग में कमी, मांग में कमी, सप्लाई चेन की समस्या, उत्पादन में कमी, रोजगार की कमी, प्रतिव्यक्ति आय मे कमी, व्यापार व्यवसाय पर प्रतिकूल प्रभाव, विदेशी मुद्रा कोष में कमी, मजदूरो के पलायन की समस्या, कोरोना से बचाव, स्वास्थ्य की चुनौती इत्यादि ऐसी चुनौतिया है जिनसे हमे निपटना होगा । हमे ऐसे कारगर समाधान करने होंगे की इस वैश्विक महामारी से उत्पन्न समस्याओ को दूर कर सके । कोविद- 19 के वैक्सीन के निर्माण, करोना की कारगर दवाई, सोशल दिस्तेन्सिंग, मास्क, सेनेटिजेर, हैण्डवॉशर इत्यादि करोना केयर को अपनाना, स्वदेशी को बढावा देना, लघु एवं कुटीर उद्योगों (MSME) को बढावा देना, गाँव में संरचनात्मक विकास एवं रोजगार को बढ़ाना, मनुष्य को सात्विक, मितव्ययी संपोषित जीवन पद्धति को अपनाना, गाँधीवादी आर्थिक मॉडल को अपनाना इत्यादि उपायों के द्वारा अर्थव्यवस्था को गति देना होगी तभी भारतीय अर्थव्यवस्था इस संकट से उभर पाएगी।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संदर्भ सूची

मिश्र एवं पूरी-भारतीय अर्थव्यवस्था 2018, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई पृ. क्र. 76 से 87

Shankar Acharya and Rakesh Mohan - India's Economy, Performance and Challenges (Delhi 2010) P. 340

Reserve Bank of India, Handbook of Statistics on the Indian Economy 2018-19

लॉकडाउन बढ़ने से भारतीय अर्थव्यवस्था को कितना होंगा नुक्सान? अमर उजाला पी.टी.आई., दिल्ली, 14 अप्रैल 2020.

IMF world economic outlook 2019.

Arun M. Kumar (CEO of KPMG) – Potential impact of covid-19 on the Indian economy- April, 2020 KPMG in India analysis, 2020.

डॉ कमल भारद्वाज – 'कोरोना संकट और विश्व अर्थव्यवस्था' सम्पादकीय मेरीकलम 2 अप्रैल 2020 समाचार पत्र र्राष्ट्रीय नवाचार

डॉ भरत झुनझुनवाला, विश्व अर्थव्यवस्था से जुड़ाव कम होने से कोरोना वायरस से भारत की अर्थव्यवस्था को कम होंगा आर्थिक नुकसान, जागरण 25 मार्च 2020.

orld economic outlook report 14th May 2020.

भारत दुनिया की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था- IMF, BBC News, 19 Dec 2018.

'ब्रिटेन और फ्रांस को पीछे छोड़ भारत बना दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था' जागरण– May 18, 2020.

रवीश कुमार, दुनिया की 90 फीसदी अर्थव्यवस्थाएं ढलान पर, Oct 9, 2019 NDTV India

Poverty reduction in India: Revisiting past debates with 60 years of data Gaurav Datt, Martin Ravallion, Rinku Murgai, 26 March 2016.

'विश्व का भविष्य विकासशील देशों पर निर्भर', 'वैश्विक रूझान 2030–वैकल्पिक दुनिया', अमेरिका की राष्ट्रीय खुफिया परिषद द्वारा जारी रिपोर्ट – 11 दिसम्बर 2012.

http://indiabudget.nic.in

wdi.worldbank.org

data.gov.in

khabar.ndtv.com/hindi

www.en.wikipedia.org

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies